Pratibha Spandan's Journal

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE (COK)
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2024
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2024

शास्त्रीय संगीत में हारमोनियम का समीक्षात्मक अध्ययन

Dr. Meenakshi Mahajan
Associate Professor, Department of Music, Fateh Chand College for Women, Hisar, Haryana, India

Read the Article Online

Cite this Article

Mahajan, M. (2024). शास्त्रीय संगीत में हारमोनियम का समीक्षात्मक अध्ययन. Confluence of Knowledge, 11(2), 170-173

सार

हारमोनियम स्वर वाद्य है भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए यह उचित वाद्य नहीं है। क्योंकि राग में लगने वाले स्वरों का स्थान अलग-2 रागों में बदल जाता है। दो समान स्वर वाले राग स्वर लगाव के कारण अलग - 2 ढंग से गाए जाते हैं। इन स्वर लगाव को हारमोनियम द्वारा स्पष्ट नही किया जा सकता। क्योंकि हारमोनियम के प्रत्येक स्वर का स्थान निश्चित है। इसके अतिरिक्त मींड, गमक, घसीट, कण, स्वर आदि का प्रयोग हारमोनियम में नहीं किया जा सकता। हारमोनियम (सोलो) आज बहुतकम सुनाई पड़ता है इसका सबसे बड़ा कारण है हारमोनियम वादन से उसकी अपनी वादन शैली की स्थापना ना होना। इसके अतिरिक्त कई बार मौसम के प्रभाव से इसके सुर ऊपर नीचे हो जाते है। जिससे इसमे अनावश्यक सुर बजने लगते है जिससे यह बेसुरा सुनाई देने लगता हैं। इन्हीं सब कर्मियों के कारण हारमोनियम शास्त्रीय संगीत में तो कामयाब नहीं हुआ परंतु अन्य गायन शैलियों में इसका प्रयोग सभी गायक बरसों से करते आ रहे हैं। नए विद्यार्थियों के लिए भी यह संगीत सीखने सिखाने की प्रक्रिया में मददगार साबित हुआ है।

विशेष शब्द - हारमोनियम, स्वर लगाव, स्वरों का स्थान

भूमिका

"स्वर और लय संगीत के मुख्य तत्व है। इन तत्वों के आधार पर ही वाद्यों के दो रूप देखने को मिलते हैं :-

1. स्वर वाद्य 2. ताल वाद्य

स्वर वाद्य के अंतर्गत वो वाद्य आते हैं जिनसे स्वरों की उत्पत्ति हो सके। स्वर वाद्य भी दो प्रकार के होते हैं पहले प्रकार में वो वाद्य आते हैं जिनमें संगीत की विभिन्न क्रियाएं जैसे मीड, कण, कृतन, खटका, मुर्की आदि विशेष रूप से प्रकट हो सकती है। इसके अंतर्गत वीणा, सितार, सरोद, सारंगी, इसराज, बांसुरी, शहनाई आदि वाद्य आते हैं जबकि दूसरी श्रेणी में जलतरंग, हारमोनियम आदि वाद्य आते है।"[1]

हारमोनियम शब्द की उत्पत्ति हार्मनी से हुई जिसका अर्थ है स्वर संवाद। यह एक विदेशी वाद्य माना जाता है। इसका आविष्कार कंठ संगीत को आश्रय देने के लिए, गीत की संगति के लिए, अखंड संगीतमय वातावरण बनाने के लिए, गीत रचना में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए, गायक को गीत में विश्राम देने के लिए हुआ। "आधुनिक काल में हारमोनियम Equality Tempered Scale पर आधारित है इसका अर्थ है हर एक स्वर की समान अंतर दूरी अर्थात स से कोमल रे, कोमल रे से शुद्ध रे एक समान दूरी पर स्थित है "[2] क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की आवाज एक जैसे न होने के कारण हर व्यक्ति का षड्ज एक दूसरे से भिन्न होता है। इसलिए हारमोनियम में किसी भी स्वर को षड्ज मानकर कलाकार गा पाता है परंतु भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए यह वाद्य अपने स्वरों के स्थान निश्चित होने के कारण सफल नहीं हो पाया।

हारमोनियम के भाग

1. हारमोनियम के पर्दे
2. रीड बोर्ड
3. किश्ती
4. स्टाप
5. धौकनी

6. कमानी

7. चाभी

हारमोनियम के प्रकार

- सिंगल रीड हारमोनियम:- इसमें सिंगल रीड लगे होते हैं इसलिए इस हारमोनियम की आवाज ज्यादा ऊंची नहीं होती। रीड का आवाज के साथ गहरा संबंध होता है।
- डबल रीड हारमोनियम:- इस हारमोनियम की आवाज सिंगल रीड वाले हारमोनियम की अपेक्षा दुगनी हो जाती है इसको बजाते समय दोनों सप्तकों के रीड को एक साथ एक ही स्थान पर सुर में मिलाया जाता है।
- कपलर हारमोनियम:- कपलर हार्मोनियम में चार स्वारों को इकट्ठा सुर किया जाता है जिससे की आवाज बहुत ऊंची हो जाती है।
- सफरी हारमोनियम:- यह डबल रीड वाले हारमोनियम की तरह ही होता है परंतु इसमें चाभियाँ नहीं होती जिससे यह सफर में आसानी से ले जाया जा सकता है।
- फोल्डिंग हारमोनियम:- यह भी डबल रीड वाले हारमोनियम की तरह ही होता है। कुर्सी पर बैठकर धौकनी को पैरों से चलाकर दोनों हाथों से इसे बजाते है synthesizer की तरह।"[3]

भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागो को शुद्ध रूप में गाने के लिए प्रत्येक राग के स्वर को लगाने का एक अलग ढंग होता है जिससे उसे राग की शुद्धता बनी रहती है। परंतु हारमोनियम केवल खड़े स्वर ही बजाने में सक्षम होता है। राग की बारिकियाँ इसमें नहीं बजाई जा सकती। इसलिए घरानेदार गायक गाने के साथ संगत के रूप में तंत्र वाद्य सारंगी या वायलिन रखते हैं। यही कारण है कि हारमोनियम (सोलो) आज भी बहुत कम सुनने को मिलता है। इसका सबसे बड़ा कारण है हारमोनियम वादन में उसकी अपनी वादन शैली की स्थापना ना होना। घराना पद्धति में गायक के अपनी आवाज के उपयोग से तथा सुर और ताल के न्यूनाधिक के कारण गायन के निजी घराने निर्मित हुए जिससे गायन में विविधता और वैचित्र्य आया। तंतू वाद्यों में अपने-अपने ढंग से बजाने के कारण घराने या बाज बने। तबला मृदंग के भी अलग-अलग बाज बने। इस पृष्ठभूमि में हारमोनियम की स्थिति नगण्य रही है।

सितार, सरोद, वीणा, वायलिन आदि तंतू वाद्यों ने सोलो वादन में अपनी शैली का निर्माण किया। पहले ये सभी वाद्य गायन की संगति करने में प्रयुक्त होते थे। तारों की झंकार, अनेक तारों पर उंगलियां रखकर एक ही समय में अनेक स्वरों की निर्मित करने की अपनी क्षमता जब ध्यान में आई तब तंतू वाद्यों ने सोलो वादन शैली में अपना अलग स्थान बनाया क्योंकि दुनिया में गायक के स्वर यंत्र द्वारा एक ही समय में एक से ज्यादा स्वर नहीं निकल सकते। यही विशेषता थी जिससे तंतू वाद्यों की शैली गायन से भिन्न हो गई। भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की महता होने के कारण तंतू वाद्यों ने गायकी अंग से वादन करना ही अपना लक्ष्य बनाया और उसी दिशा में विकास किया। परंतु हारमोनियम अपनी कोई शैली बनाने में असफल रहा। इस वाद्य में स्वर संवाद को भी पूरी तरह से ठीक से प्रकट नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें प्रत्येक स्वर का एक निश्चित स्थान है यही कारण है कि उच्च स्तरीय गायकों के शास्त्रीय संगीत के प्रोग्रामों में हारमोनियम की जगह सरोद, सारंगी ने ले ली है।

जो विद्यार्थी शास्त्रीय संगीत के रागों को भी हारमोनियम बजाकर गाते हैं वास्तव में वह सहारा लेकर तो गा लेते हैं परंतु स्वतंत्र गायन कभी नहीं कर पाते। हारमोनियम पर स-प छेड़ कर गाने पर सभी बेसुरा गाने लगते हैं। उनको सहारे की आदत पड़ जाती है। बिना सहारे के राग गाना उनके बस की बात नहीं होती। दुर्भाग्य से आज विद्यालयों, महाविद्यालय में इसी वाद्य पर राग सिखाए जा रहे हैं। इसे चाहे शिक्षक की मजबूरी मान लिया जाए अथवा शिक्षकों को पक्का नहीं करने की सरकार की नीति के कारण अच्छे शिक्षक अच्छे परिश्रमिक ना होने के कारण विद्यालयों, महाविद्यालयों में नहीं जाते। कच्चे शिक्षक अधकचरा ज्ञान हारमोनियम की सहायता से बाँटते हैं जो की ठीक नहीं है।

दो राग में लगने वाले समान स्वर अलग ढंग से लगाए जाते हैं। जैसे तोड़ी का गन्धार, दरबारी कान्हड़ा के गन्धार से बिल्कुल अलग है। भैरव का धैवत ललित राग के धैवत से बिल्कुल अलग ढंग से गया जाता है। परंतु हारमोनियम में तो स्वर स्थान प्रत्येक स्वर के निश्चित हैं। उनको अलग ढंग से बजाया नहीं जा सकता। हारमोनियम को केवल राग सीखने के बाद संगत के लिए ही बजाया जाना चाहिए।

जहाँ हारमोनियम में बहुत सी ऐसी खामियां हैं जिस कारण यह भारतीय शास्त्रीय संगीत(जो की विश्व का सबसे अधिक कठिन संगीत प्रकार माना गया है) के महत्वपूर्ण चीजों को बजाने में असफल सिद्ध हुआ है। दूसरी ओर यह देखना होगा कि ऐसी कौन सी खास बातें हैं जो गायन तथा तंतू वाद्यों में नहीं है और उन खास बातों का हारमोनियम सोलो वादन में किस तरह उपयोग किया जा सकता है।

तानपुरा, वीणा, सितार, वायलिन, सरोद आदि तंतू वाद्यों में तार की झंकार एक आघात से (वायलिन को छोड़कर) ज्यादा से ज्यादा 15 सेकंड तक रहती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हारमोनियम के स्वर की ध्वनि को लंबे समय तक जारी रहने की क्षमता को परखा जा सकता है। धौकनी के सिर्फ एक बार दबाने से ध्वनि लंबे समय तक जारी रहती है। यह हारमोनियम की पहली विशेषता है।

सितार के तरब के तार सितार वादन में अपनी झंकार से अनोखा योगदान देते रहते हैं। हारमोनियम में यह सुविधा अभी तक उपलब्ध नहीं है। सितार के बाज के तार पर बजाए गए सुर से संवाद साधने वाले सुर में मिलाई गई नीचे की ' तरब ' झंकृत होती है। फिर भी बाज के तार पर एक ही समय में सिर्फ एक ही सुर उत्पन्न होता है किंतु हारमोनियम में एक ही समय में जितनी उंगलियाँ हारमोनियम की जितनी भी पट्टियों पर रखेंगे उतने स्वर एक ही समय में बजते हैं। अलग स्वरों की एक साथ निर्मिती के लिए किसी भी दूसरे वाद्य में अलग-अलग तारों पर अलग-अलग अघात करने पड़ते हैं। हारमोनियम में धौकनी से मिली हवा के बल पर अनेक सुर एक साथ निकलते हैं यह हारमोनियम की दूसरी विशेषता है।

जितने लंबे समय तक एक स्वर बजता है उतने समय में दूसरे हाथ से हारमोनियम बजाया जा सकता है जैसे कि पियानो को बजाते समय किया जाता है। पियानो में स्थूल रूप से दायाँ हाथ मेलोडी और बायाँ हाथ उस मेलोडी की पूरक हार्मनी के कार्ड्स बजाता है या रिदम देता है।

यह भी सत्य है कि हारमोनियम में स्वरों को मिलने का कोई झंझट नहीं होता इसलिए प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों को शास्त्रीय संगीत सीखने में बहुत सहायता मिलती हैं। स्कूलों, कॉलेजों में विद्यार्थी हारमोनियम की सहायता से ही रागों को सीखते हैं। जब राग के स्वर लगाने आ जाते हैं तब हारमोनियम में स-प को दबाकर स्वतंत्र रूप से राग गाते हैं। हारमोनियम की सहायता से सीखने वाले बच्चे कलाकार तो नहीं बन सकते हाँ जानकार जरूर बन जाते हैं। हाँ, यदि प्रयत्न किया जाए तो यह आगे चलकर कलाकार भी बन सकते हैं। संगीत की स्कूली शिक्षा के लिए हारमोनियम वाद्य इसलिए लाभदायक है कि यह घर पर स्वरों के अभ्यास के लिए शिक्षक का कार्य करता है। आरंभिक सीखने वाले विद्यार्थियों को स्वर ज्ञान करवाने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हारमनी के लिए यह वाद्य उपयुक्त जान पड़ता है। कई स्वरों को एक साथ एक ही बार में बजाने की संभावना के कारण इस वाद्य का प्रयोग विद्यार्थियों को हारमनी का ज्ञान करवाने के लिए भी किया जाता है। इसको दूसरे वाद्यों की तुलना में बजाना आसान भी है।

हारमोनियम में मीड गमक आदि का प्रयोग यद्यपि नहीं किया जा सकता परंतु मुर्की लयकारी का विशेष अंग बहुत उचित ढंग के साथ दिखाया जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि जब गया के मास्टर सोनी और मैया गणपतराव जी के हाथों में हारमोनियम होता था तो वह बड़े-बड़े सारंगी और सितार वादक की छुट्टी कर देते थे।

निष्कर्ष

हारमोनियम विदेशी वाद्य है। विदेशियों ने यह वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए नहीं बनाया होगा। इसका उद्देश्य तो केवल कंठ संगीत को आश्रय देने के लिए, गीत की संगति के लिए, गीत रचना में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए और आम आदमी के लिए गाते समय एक सहारे की आवश्यकता के लिए बनाया गया होगा। परंतु धीरे-धीरे अपनी बहुत सी विशेषताओं जैसे सुर में मिलाने का झंझट नहीं है तो आम आदमी तुरंत जल्दी से कुछ ना कुछ बजा पाने में सक्षम हो जाता हैं। बजाने में सरल है, कहीं लाने - ले जाने में सुविधा है। आम आदमी, बच्चों आरंभिक संगीत ज्ञान अर्जित करने वाले विद्यार्थियों के लिए एक बड़े सहारे के रूप में यह वाद्य काम में आया।

आरंभिक स्वर ज्ञान के लिए विद्यार्थियों को इस वाद्य से काफी सहायता मिलती है। स्वरलिपि बजाना इसमें सरल है। स्वरलिपि के माध्यम से गीत को हारमोनियम पर कोई भी जल्दी से गाना बजाना सीख लेता है। छोटे बच्चे छोटे-छोटे गाने बड़ी आसानी से हारमोनियम के सहारे गा पाते हैं। सुर समझने में आसानी हो जाती है।सुर में ना मिलाने का झंझट खत्म होने के कारण यह वाद्य धीरे-धीरे जनसाधारण के घर-घर में पहुंच गया। जिसे जैसे थोड़ा बहुत भी आता था हाथ पैर मार कर 'आरती', 'जन गण मन' राष्ट्रीय गान तो हर घर में आमजन सीख लेता है। सुगम संगीत, भजनों, लोकगीत

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE (COK)
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2024
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2024

शैली की तो यह साज जान हैं। बिना इसके तो महफिल सुनी सुनी सी लगती हैं। आधुनिक समय में सभी जगह विद्यालयों, महाविद्यालयों में विद्यार्थी शुरुआत में इसी से शास्त्रीय ज्ञान लेते हैं।

जहां तक आरंभिक संगीत के ज्ञान के लिए हारमोनियम का प्रयोग होता है तो ठीक है परंतु लंबे समय तक हारमोनियम के साथ अभ्यास करने से विद्यार्थी कभी बिना सहारे के गा नहीं पता, परीक्षा में सभी राग के सुर एक दूसरे में मिल जाते हैं। स्वतंत्र रूप से बिना सहारे के वो गा नहीं पाता। दूसरी और हारमोनियम में भारतीय शास्त्रीय संगीत की बारिकियों, श्रुती भेद में असमर्थता, सौंदर्यात्मक तत्व जैसे मीड़, कण, घसीट बजाने में सक्षम न होने के कारण यह भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए उपयोगी वाद्य किसी भी दृष्टि से नहीं है। स्वर लगाव ना बज पाने के कारण यह असफल सिद्ध हुआ है क्योंकि स्वर लगाव को आज तक दुनिया की कोई पुस्तक नहीं लिख पाई और ना लिख पाएगी। यह तो केवल गुरुमुख से शिष्यों तक पहुंचता है इसलिए घराने बने जहां शिष्य कुछ साल गुरु के पास रहकर स्वर के लगाव को सीखता था। स्वरों की बारिकियों का ज्ञान गुरुमुख से जानता था तब जाकर कई साल उन सुरों की साधना करके गायक बन पाता था। अगर बिना गुरु के हारमोनियम पर राग बज रहे होते तो आज देश में शास्त्रीय संगीतज्ञों की बाढ़ लग जाती और गिनती करना मुश्किल होता।

इन सभी तत्वों के आधार पर सिद्ध होता है कि हारमोनियम का शास्त्रीय संगीत (भारतीय) में प्रयोग करना अनुचित है। हाँ, संगीत की बाकी शैलियों सुगम संगीत, लोक संगीत, छोटे-छोटे बच्चों के गीत, साधारण जनमानस के लिए गाने में एक सहारे के लिए, मनोरंजन के लिए, यह एक बड़ा वरदान साबित हुआ है। अपनी सरलता के कारण इस वाद्य ने आज भारत में घर-घर में अपनी पैठ भी बना ली है।

संदर्भ

1. कौर, भगवंत. (2002). परम्परागत हिंदुस्तानी सिद्धांतिक संगीत. कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली. प्र-167
2. कौर, भगवंत. (2002). परम्परागत हिंदुस्तानी सिद्धांत संगीत. कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली. प्र-200
3. कौर, भगवंत. (2002). परम्परागत हिंदुस्तानी सिद्धांतिक संगीत. कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली. प्र-201